अब यह है बेहद की बातें। हद की बातें सब निकल जाती हैं। वहाँ अनेकों को याद किया जाता है। अनेक देहधारी साथ प्रीत रहती है। विदेही एक ही है जिनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। अब उनके साथ ही बुद्धि योग लगाना है। कोई देहधारी को याद नहीं करना है। ब्राह्मण आदि खिलाना यह हो गया भक्ति मार्ग की रसम रिवाज। वहाँ के रसम रिवाज और यहाँ के रसम रिवाज बिलकुल अलग है। यहाँ कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। जब तक वो अवस्था आवे तब तक चलता रहता है। बाप कहते है जितना हो सके पुरानी दुनियाँ के जो हो कर गये हैं वा जो हैं सबको भूल जाओ। सारी दिन बुद्धी में यही चले कि किसको क्या समझाना है। आकर बच्चे के पास्ट प्रेज़ेन्ट फ्यूचर को समझो। जिसको कोई भी नहीं जानते हैं। पास्ट अर्थात कब से यह शुरू हुआ। प्रेज़ेन्ट अब क्या है। शुरू हुआ है सतयुग से। तो सतयुग से लेकर अब तक फ्यूचर क्या होना है यह दुनिया नहीं जानती है। तुम बच्चे जानते हो मानते हो इसलिये ही चित्र आदि बनाते हो। यह है बड़ा बेहद का नाटक। वो छोटे हद के नाटक तो बहुत बनाते है। स्टोरी बनाने वाले अलग होते है और नाटक की सीन सीनरियाँ बनाने वाले अलग होते है। अब इस बेहद के ड्रामा की स्टोरी तो तुम जानते हो। बाकी नई दुनिया की सीन सीनरी क्या होती है। कैसे दुनिया की फर्स्ट की राजधानी चलती है। अनेक धर्म विनाश होकर एक आदि सनातन दैवी देवता धर्म की स्थापना होती है। यह सारा राज अभी तुम्हारी बुद्धी मे है। अभी जो कुछ देखते हो वो नहीं रहेगा। विनाश हो जायेगा तो तुमको सतयुग के सीन सीनरियाँ बहुत अच्छे-2 दिखाने पड़े। जैसे अजमेर मे भी दिखाया है। तो उसमे से भी सीन सीनरियाँ लेकर नई दुनिया अलग, फिर तुम दिखाओ की इस पुरानी दुनिया को आग लगनी है। इनका भी नक्शा तो है नाँ। और यह नई दुनिया इमर्ज हो रही है। रावण की=कलयुगी दुनियाँ को आग लग रही है और बाजू में विश्व की राजधानी स्थापन हो रही है। ऐसे-2 ख्याल कर अच्छी रीति बनाना चाहिये। यह तो तुम समझाते हो कि इस समय मनुष्यों की है बिल्कुल ही जैसे कि ऐप बुद्धी। कितना तुम समझाते हो तब भी कोई की बुद्धी में बैठता नहीं है। तो वे जो नाटक वालों से सीन सीनरी बनाते है। कोईसे मदद लेकर सतयुग की सीन सीनरी बहुत अच्छी बनानी चाहिये। वो लोग आईडिया मिलेगी। युक्ति बतायेंगे। बाबा को समाचार आया था। वो लोग दाम बहुत लेते है। फिर भी समझ कर ऐसा अच्छा बनाना चाहिये जिससे कि वो लोग समझे कि बरोबर सतयुग में एक धर्म था। तुम बच्चों में भी नम्बरवार है जिनकी धारणा रहती है। देह-अभिमानी बुद्धी को छी-2 कहा जाता है। देही-अभिमानी को गुल-गुल कहा जाता है। अभी तुम फूल बनते हो। देहअभिमान रहने से काँटे के ही काँटे रहते है। तुम बच्चों को तो इस पुरानी दुनिया से वैराग करना है। तुम्हारी है बेहद की बुद्धी और बेहद का वैराग। हमको इस वैश्यालय से बड़ी नफरत है। अभी हम शिवालय मे जाने लिये फूल बन रहे है। बनते-2 भी अगर फिर कोई खराब काम चलने चलते है तो उनसे बहुत नफरत आ जाती है। समझा जाता है कि इनमे भूत की प्रवेशता है। एक ही घर में पति हंस बन रहा है, पत्नि बगुला है तो डिफीकल्टी होती है। सहन करना पड़ता है। समझा जाता है कि इनकी तकदीर मे नहीं है। सभी तो दैवी कुल के बनने वाले नहीं है नाँ। जो बनने वाले होंगे वो ही बनेंगे। बहुतों की खराब चलन कर रिपोर्ट्स आती है, इनमें यह आसुरी गुण है। इसलिये तो बाबा रोज समझाते है कि अपना पोतामेल रोज लिखो देखो कि आज हमने दिन भर में कोई आसुरी काम तो नहीं किया? यहाँ भी रोज कचहरी करनी होगी। बाबा जानते है सच नहीं बतावेंगे। समझते नहीं है। बाबा कहते है सारे जीवन मे जो भूल की है वो बताओ। कोई गन्दा काम करते है तो गर्भवती हो जाती है तो वो बात सर्जन को बताने में लज्जा आती है। क्योंकि इज्जत जावेगी नाँ। ना बताने से फिर नुकसान हो जावे। आजकल तो बहुत गन्दे होकर फिर ~~सफाई~~ करवा देते है। डाक्टरों के पास ऐसे बहुत केस आते है। यहाँ भी माया ऐसा थप्पड़

मरती है जो कि एकदम सत्यानाश कर देती है। इस्टेट की ब्राह्मणी भी ऐसी गन्दी बन जाती है। माया बड़ी जबरदस्त है। पांच विकारों पर जीत पा नही सकते है तो बाप भी क्या करेंगे। अब गवर्मेन्ट पास केस चला जावे और वो पूछे तो कहेंगे भल केस कर जेल में डाल दो। और क्या करेंगे। क्यो कि बाप कहते है कि मैं रहम दिल भी हूं। तो कालों का काल भी हूं। मुझे बुलाते ही है कि हे पतित पावन आकर मुझे पतित से पावन बनाओ। यह नाम तो दोनो हैना। कैसे रहम दिल भी हू और कालों का काल भी हू वो पार्ट अब बज रहा है। कांटो को फूल बनाते है। तुम्हारी बुद्धी मे वो रुची है। अब अमरनाथ पर जाकर भी सर्विस करने लिये प्रोग्राम बना रहे है। कहते है अमरनाथ ने पार्वती को अमरकथा सुना कर अमर बनाया। फिर वो कहां गये किसीको पता थोड़ेई पड़ता है। अब बच्चे वहां प्रदर्शनी कर रहे है तो इस पर वहां वो समझावेंगे। चित्र छपवाने पड़ेंगे कि यह अमरनाथ की यात्रा भक्ति दुर्गति मार्ग की यात्रा है। अब बाप कहते है, मन मनाभव। मामेकम् की यात्रा करो तो तुम्हारे पाप विनाश हो और तुम अमर पुरी मे चले जाओ। अमरपुरी क्या है मृत्यु लोक क्या है यह किसीको भी पता नही है। तो उनको सावधान करना पड़े। पत्रे ऐसे बांटने चाहिये जो कि वो मनुष्य समझ जावे कि यह तो भक्ति मार्ग की यात्रा है। और यह है ज्ञान की सच्ची यात्रा। अमरनाथ बाप कहते है कि तुम सभी पार्वतियां हो। अभी तुम मामेकम याद करो तो तुम अमर पुरी मे चले जावेंगे। और तुम्हारे पाप नाश हो जावेंगे। इस यात्रा करने पर तुम्हारे पाप तो नाश होते नही है। यह है भक्ति मार्ग की यात्राये। अब बाबा डायरेक्शन देते है पहले से ही अच्छी रीती मैटर बना कर फिर बाबा के पास भेज देवे तो फिर बाबा करेक्ट करेंगे। ऐसे नही पिछाड़ी के समय जल्दी-2 मे करवा लेवे। बाप तो डायरेक्शन ही देंगे ना। एक तो बाबा ने कहा कि नाटक बनाने वाले बाम्बे मे बहुत अच्छे है। कोशिश करके उनको पकड़ना चाहिये। यह तो धन्धे का काम है कोई धन्धा आद तो हमको करना नही है। बच्चों से यह प्रश्न भी पूछते है कि खर्चा आद कैसे चलता है? परन्तु ऐसा कोई समझदार नही लिखते है कि हम स्थापना करते है कि हम ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण है। तो हम ही तो अपने लिये खर्चा करेंगे नां। राजाई श्रीमत पर हम स्थापन कर रहे है। सो भी अपने लिये। राज्य भी हम ही करेंगे क्योकि राजयोग से हम सीखते है तो खर्चा भी तो हम ही करेंगे ना? शिव बाबा तो अविनाशी ज्ञान रत्नो का दान देते है। जिससे ही हम राजाओं का राजा बनते है। बच्चे जो पढ़ेंगे वो ही खर्चा करेंगे नां। समझाना चाहिये कि हम अपना ही खर्चा करते है हम कोई भिक्षा वा चन्दा आद नही लेते है। परन्तु इन फार्मो मे किसीको समझाने की भी अक्ल नही है। सिर्फ लिख देते है कि यह-2 पूछते है। इसलियेही हमने कहा था जो जो सारे दिन मे सर्विस करते हो जो जो कोई पूछते है इस पर यह समझाया तो इस पर भी करेक्शन हो जावे कि ऐसे-2 समझाना चाहिये था। जो सर्विस होती है तो उसकी पीठ होनी चाहिये नां। क्या समझाया क्या समझाना है उसकी भी पीठ होनी चाहिये। बाकी आते तो ढेर है फिर वो सब प्रजा बनते है। ऊंच पद प्राप्त करने वाले बहुत थोड़ेई। राजाये थोड़े होते है शाहुकार भी थोड़े। बाकी गरीब बहुत होते है। यहां भी ऐसे है तो नई दैवी दुनियां मे भी ऐसे ही होताहै। राजाई स्थापन होती है तो उसमे तो नम्बरवार चाहिये नां। बाप आकर राजयोग सिखा कर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते है। दैवी राजधानी थी अभी नही है। बाप कहते है मै फिर स्थापना करता हूं। तो किसीको समझाने के लिये चित्र भी ऐसे ही होने चाहिये। बाबा की मुरली सुनेंगे तो पहले से ही ख्याल करना चाहिये पहले पहले से ही छपाने से करेक्शन होगी। दिन प्रति दिन करेक्शन तो होती ही रहती है नां। तुम अपनी अवस्था को भी देखते रहो कि कितनी करेक्ट होती जाती है। बाप आकर गन्दगी से निकालते है। जितना जो बहुतों को निकालने की सर्विस करेंगे वो उतना ऊंच पद पावेंगे। तुम बच्चों को तो एकदम

करि करि एकदम हीरा रहना चाहिये। सतयुग से भी यहाँ तुमको बाप ऊँचा बनाते है। बाप ईश्वर पढ़ाते है तो उनको अपनी पढ़ाई का जलवा दिखाना चाहिये तो ही वो बाप भी फिर कुरबान जावेगा। दिखाई आना चाहिये वह अभी तो हम भारत को स्वर्ग बनाने का ही धन्धा करेंगे। यह हरदम लगाना करना तो करते ही रहेंगे। पहले अपनी उन्नती का तो करें। है बहुत सहज। मै सब कुछ कर सकता हूँ। गृहस्थ व्यवहार मे रहते हुये राजाई पद पाना है। इसलिये ही रोज अपना पौता मेल निकालो। सारे दिन का फायदा और नुकसान निकालो। पौतामेलनही निकालोगे तो सुधरना मुश्किल है। बाप का कहना मानते नही है। रोज देखना चाहिये कि किसको हमने दुःख तो नही दिया है। पद बहुत ऊँचा है। अथाह कमाई है नही तो फिर रोना पड़ेगा। रेस होती है ना तो उसमे कोई तो लाखों कमा लेते है कोई तो फिर देवाले निकाल। तुम्हारी है ईश्वरिय रेस। इसमे तो कोई दौड़ी आद भी नही पहननी है। सिर्फ बुधी से प्यारे बाप को याद करना है। कुछ भी भूल हो तो झट सुनाना चाहिये बाबा हमसे यह भूल हुई। कर्म इन्द्रियों से यह भूल की। बाप कहते है राईटियस सोचना की बुधी मिली है तो अब रांग कोई काम नही करना है। रांग काम कर दिया तो बाबा तो पनाह या क्षमा नही करते है। क्योंकि बाप यहाँ बैठा हुआ है सुनने के लिये। मै भी तो यह कान है ना। सुन सकता हूँ। जो भी बुरा काम हो जावे तो फौरन बाबा को लिखो वो बताओ की यह बाबा बुरा काम हो गया तो तुम्हारा जिससे कि आधा माफ हो जावे। ऐसे नही कि मै बुरा करूँगा। क्षमा वो कृपा पाई की भी नही होगी। सबको अपने को सुधारना है बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। पहले का भी योगबल से कटता जावेगा। बाप का बन कर फिर बाप की निन्दा नही कराओ। सतगुरु का निन्दक ठौर ना पावे....ठौर तुमको मिलती है बहुत ऊँची। दूसरे गुरूओं पास कोई राजाई की ठौर नही मिलती है। यहाँ तो तुम्हारी ऐम आब्जेक्ट है। भक्ति मार्ग मे ऐम आब्जेक्ट होती नही है। अगर होती भी है तो अल्पकाल के लिये। कहाँ तो 21जन्मों का सुख कहाँ अल्पकाल का सुख। ऐसे नही कि धन से सिर्फ सुख होता है। अच्छा समझो कोई ने हास्पिटल बनाई तो वो दूसरे जन्म मे निरोगी होगा। ऐसे तो नही कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी। धन भी जास्ती मिलेगा। इसके लिये तो फिर सब कुछ करो। कोई सिर्फ धर्मशाला बनाते है तो दूसरे जन्म मे सिर्फ महल मिलेगा। ऐसे नही कि तनदरूस्त भी रहेगा। नही। तो बाप कितनी बाते समझाते है। कोई तो अच्छी रीती समझ कर समझाते है कोई तो समझते ही नही है। तो रोज पौता मेल निकालो कि आज सारे दिन मे क्या किया। इस बात मे ठगा। तो बाबा राय देंगे तो अच्छा यह ठगी करते हो तो यह भी करना पड़ेगा। ठगी बिना तो शरीर निर्वाह चल नही सकता। व्यापारी लोग तो कितनी ठगी करते है। फिर जब पकड़े जाते है तो हार्ट-2 की नाडी तोड़ देते है। बहुत गन्दी दुनिया है। तुम जानते हो हम तो अब स्वर्ग मे जाते है। बच्चों को खुशी का पारा नही चढ़ता है। हम बुढ़ा हूँ। जानता हूँ कि यह शरीर छोड़ कर जाकर हम प्रिन्स बनने वाला हूँ। तुम भी पढ़ते हो तो क्यो नही खुशी का पारा चढ़ना चाहिये। परन्तु बाप को याद ही नही करते है। बाप तो कितना सहज समझाते है। वो इंगलिश आद पढ़ने मे माथा कितना गर्म होता है। बहुत डिफीकल्टी होती है। इस पढ़ाई से तो माथा ही शीतल हो जाता है।तुमसिर्फ बाप को है याद करते रहो तो एकदम शीतल अंग हो जावेंगे। शरीर तो तुमको है ही ना। शिव बाबा को तो शरीर नही है नां। राईट बुधी मिली है त तो अब रांग काम नही करना चाहिये। अंग है श्रीकृष्ण को। उनके तो अंग शीतलहै ही। इसलिये ही उनका नाम रख दिया है। अब उनका संग कैसे हो?अ वो तो होता ही है सतयुग मे। उनका भी ऐसा शीतल अंगकिसने बनाया? यह अभी तुम समझते हो। बहुत जन्मों के भी अन्त के जन्म मे बाप बैठ कर उनके अंग शीतल बनाते है। तो तुम बच्चों को भी उतनी ही धारना करनी चाहिये।लड़ना झगड़ना बिलकुल नही चाहिये। सच नही सुनाते है और ही झूठ बोलते है तो और ही सत्यानाश हो जाती है। झूठ बोलना तो [illegible] झूठ बोलना तो पुराना कर्म है। ऐसा नही करो।ओम